सितंबर: 2025 वर्ष : 8 अंक : 12

सिफरी मासिक समाचार

हिंदी हैं हम

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।”

डॉ. अमरनाथ झा

सर्वप्रथम आप सभी को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

14 सितंबर का दिन हम सभी भारतीयों के लिए बेहद गौरवमयी दिन है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत का संविधान तैयार करने के लिए संविधान का गठन हुआ। लेकिन भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, ये एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया और तब हिंदी और अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चुना गया। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी और हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। तब से हर साल इस दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में वक्तव्य को महत्ता दे रहे हैं।

संस्थान ने केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (CIFE), कोलकाता केंद्र साथ मिलकर श्री राजीव रंजन सिंह, माननीय केंद्रीय मंत्री, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित की उपस्थिति में 2 अगस्त, 2025 को ‘पीएम-किसान उत्सव दिवस’ पर एक विशेष जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजन किया ।

प्रस्तुत सितंबर 2024 अंक में संस्थान में हुये अगस्त माह के कार्यकलापों का विवरण दिया गया हैअंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

'पीएम-किसान उत्सव दिवस' का आयोजन ICAR-CIFRI एवं ICAR-CIFE द्वारा: किसानों के कल्याण के लिए एक मील का पत्थर

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना के अंतर्गत ICAR-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI) ने ICAR -केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (CIFE), कोलकाता केंद्र के सहयोग से 2 अगस्त, 2025 को 'पीएम-किसान उत्सव दिवस' पर एक विशेष जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

इस अवसर पर श्री राजीव रंजन सिंह, माननीय केंद्रीय मंत्री, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित रहे। उन्होंने किसानों और मत्स्यपालकों के कल्याण तथा आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई।

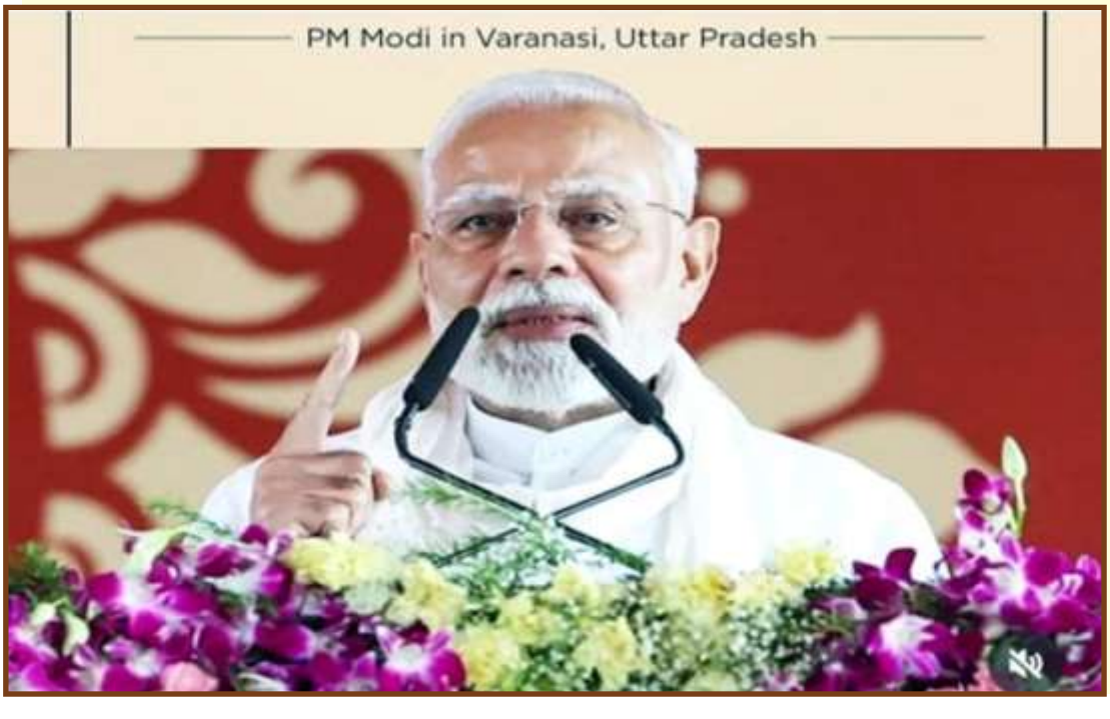

कार्यक्रम में दक्षिण 24 परगना जिले के 81 मछुआरे और मछली किसान शामिल हुए। इनके साथ ICAR-CIFRI, बैरकपुर और ICAR-CIFE, कोलकाता केंद्र के वैज्ञानिक व तकनीकी स्टाफ भी उपस्थित थे। लाभार्थियों को किस्त की राशि आने की रीयल-टाइम एसएमएस सूचना भी प्राप्त हुई।

देशभर में 2 करोड़ से अधिक किसानों ने इस कार्यक्रम से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम

से जुड़कर भागीदारी की। इसे ICAR संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs), विश्वविद्यालयों, पीएम किसान समृद्धि केंद्रों और प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों से जोड़ा गया था।

कार्यक्रम की मुख्य झलकियाँ:

ICAR-CIFE, कोलकाता में कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह जी ने पवित्र पौधे को सिंचित करके किया।

उन्होंने मछुआरों और मछली किसानों से संवाद किया और अपने संबोधन में जीविकोपार्जन और रोजगार सृजन में मत्स्यपालन के महत्व को रेखांकित किया।

सुबह 11 बजे भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश के किसानों को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री ने किसानों की आजीविका सुधारने, कृषि आय बढ़ाने, आधुनिक तकनीक और संस्थागत सहयोग उपलब्ध कराने की सरकार की प्रतिबद्धता पर बल दिया।

प्रधानमंत्री ने पीएम-किसान योजना की 20वीं किस्त (20,500 करोड़ रुपये) जारी की, जो देशभर के 9.7 करोड़ किसानों तक पहुंचाई गई।

इनमें से केवल पश्चिम बंगाल के 44,78,526 किसान इस किस्त से लाभान्वित हुए।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भी वर्चुअल संवाद किया। उन्होंने सीधे किसानों से बातचीत कर उनके सवालों के जवाब दिए और सतत एवं एकीकृत कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही, किसानों से KCC (किसान क्रेडिट कार्ड), PMMSY और PM-KISAN योजनाओं का लाभ उठाने का आग्रह किया।

यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI, बैरकपुर तथा डॉ. टी. के. घोषाल, प्रमुख, ICAR-CIFE, कोलकाता केंद्र, के नेतृत्व में वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ की टीम द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

डॉ. दास ने कहा कि मत्स्य अनुसंधान, क्षेत्रीय स्तर पर किसानों तक पहुँच और सरकारी सहयोग का समन्वय ही अंतर्स्थलीय एवं मुहाना (estuarine) मत्स्य क्षेत्र के समावेशी विकास का आधार है।

कोलकाता में आयोजित पीएम-किसान उत्सव दिवस भारत सरकार की "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" की सोच का एक सशक्त उदाहरण है। इसने यह भी दर्शाया कि वैज्ञानिक संस्थान सतत, समावेशी और लचीले कृषि एवं मत्स्य विकास को आगे बढ़ाने में कितनी अहम भूमिका निभाते हैं।

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र,गुवाहाटी में खुले जल में जल एवं मृदा गुणवत्ता परीक्षण पर 5 दिवसीय व्यवहारिक प्रशिक्षण

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 4–8 अगस्त 2025 के दौरान "खुले जल में जल एवं मृदा गुणवत्ता परीक्षण हेतु व्यवहारिक प्रशिक्षण" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। यह कार्यक्रम आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास तथा गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख डॉ. एस. के. माझी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण का समन्वय डॉ. राकेश कुमार और डॉ. सिमंकू बोरा, वैज्ञानिकों ने किया, जबकि सह-समन्वयक डॉ. बि. के. भट्टचार्य(प्रधान वैज्ञानिक) एवं डॉ. ए. के. यादव (वरिष्ठ वैज्ञानिक) सहित केंद्र के अन्य कार्मिकों ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

प्रशिक्षण का उद्घाटन एवं समापन डॉ. एस. के. माझी की उपस्थिति में हुआ। कुल 16 प्रतिभागियों (06 महिला, 10 पुरुष) ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिनमें आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, कॉलेज ऑफ़ फ़िशरीज (असम कृषि विश्वविद्यालय, राहा), कॉलेज ऑफ़ फ़िशरीज (केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, लेंबुचेहरा) एवं मत्स्य क्षेत्र से जुड़े एनजीओ के प्रतिनिधि शामिल थे। कार्यक्रम में सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक सत्र सम्मिलित थे। प्रमुख विषयों में खुले जल संसाधनों का परिचय, बुनियादी प्रयोगशाला तकनीकें, जल व मृदा गुणवत्ता मानक, पोषक तत्त्व गतिकी, भारी धातु, सूक्ष्म पोषक तत्व, जलीय प्रदूषक, अलंकरण मत्स्य पालन, लिम्नोलॉजिकल डाटासेट हेतु सांख्यिकीय उपकरण तथा जल गुणवत्ता सूचकांक (WQI) शामिल थे।

बैरकपुर और प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र के विशेषज्ञों द्वारा चार ऑनलाइन व्याख्यान दिए गए। व्यवहारिक सत्रों में प्रतिभागियों ने जल व मृदा के भौतिक-रासायनिक मानकों का परीक्षण, प्राथमिक उत्पादकता का आकलन, पोषक तत्वों का विश्लेषण, मृदा की बनावट व कार्बनिक कार्बन का परीक्षण तथा R और SPSS सॉफ़्टवेयर का प्रयोग कर डेटा विश्लेषण किया। समापन सत्र में प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी बताया तथा अपने अनुसंधान एवं क्षेत्रीय कार्यों में इसे सहायक माना।

डेटा कौशल में वृद्धि: मत्स्य अनुसंधान हेतु आर पर व्यवहारिक प्रशिक्षण का आयोजन आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई में

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफ़आरआई), बैरकपुर, कोलकाता में 6 से 8 अगस्त 2025 के दौरान "आर में डाटा विश्लेषण और दृश्यांकन" विषय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

उद्घाटन सत्र में डॉ. दास ने प्रतिभागियों को मत्स्य एवं पारिस्थितिकीय डाटा के प्रबंधन और विश्लेषण हेतु आर सॉफ़्टवेयर की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर व्यावहारिक दक्षता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण में आर सॉफ़्टवेयर की बुनियादी जानकारी, डेटा तैयारी और सफाई, अन्वेषणात्मक डेटा विश्लेषण (EDA), डेटा दृश्यांकन, मूलभूत सांख्यिकी, बहु-सहसंबंध, प्रतिगमन और पारिस्थितिकीय डेटा विश्लेषण जैसे विषय शामिल थे।

प्रतिभागियों को हैंड्स-ऑन समर्थन प्रदान किया गया। ggplot के माध्यम से आकर्षक ग्राफ़िक्स तैयार करने के लिए बुनियादी कोड का विस्तृत अभ्यास कराया गया। इस प्रशिक्षण में अधिक ध्यान व्यावहारिक पक्ष पर दिया गया। कुल नौ प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में हिस्सा लिया, जिनमें दो प्रतिभागी मणिपुर से आए थे।

प्रशिक्षण का समन्वय वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पी. के. परिदा एवं डॉ. लियान्थुआमलुआइया ने किया और इसमें श्री अभिलाषवोडेयर के तथा श्री सनातन पाल ने सहयोग दिया।

जल संसाधन प्रबंधन हेतु आणविक उपकरणों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण का आयोजन

आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई ने 4 से 8 अगस्त 2025 तक "जल संसाधन प्रबंधन हेतु आणविक उपकरण" विषय पर एक व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में प्रमुख विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों से आए 20 प्रतिभागियों (जिनमें 14 महिला प्रतिभागी शामिल थीं) ने आधुनिक आणविक तकनीकों की आवश्यक दक्षताओं का अभ्यास किया।

उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफ़आरआई ने खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता संरक्षण की दृष्टि से पर्यावरणीय तनाव के प्रति जलीय प्रजातियों की आणविक प्रतिक्रियाओं के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। प्रशिक्षण में डीएनए पृथक्करण, मात्रात्मक विश्लेषण, पीसीआर, जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस, प्रोटीन निष्कर्षण, धुंधला तकनीक और बायोइन्फ़ॉर्मेटिक्स जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से शामिल किया गया।

आंतरिक विशेषज्ञों के साथ-साथ डॉ. जे. सुन्द्राय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, मत्स्य आनुवंशिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग, आईसीएआर-सीआईएफ़ए तथा डॉ. ए. पवन कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफ़ई ने भी ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से विशेषज्ञ व्याख्यान दिए।

प्रतिभागी अलीपुरद्वार विश्वविद्यालय, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, बनस्थली विद्यापीठ, डॉ. जे. जयललिता मत्स्य विश्वविद्यालय, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ जैसी संस्थाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

रोग निदान और प्रयोगशाला अभ्यास में क्षेत्रीय अधिकारियों की क्षमता सुदृढ़ करना

संस्थान ने 4 से 8 अगस्त, 2025 तक ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य क्षेत्रीय स्तर के अधिकारियों की रोग निदान और प्रयोगशाला परीक्षण तकनीकों में ज्ञान और क्षमता को बढ़ाना था। प्रशिक्षण मॉड्यूल युवा अधिकारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन कर विशेष रूप से तैयार किया गया।

इस कार्यशाला में कुल 29 अधिकारी (जिनमें 12 महिला अधिकारी शामिल थीं) ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान 11 कक्षा सत्र, 2 प्रायोगिक सत्र और 2 क्षेत्रीय भ्रमण आयोजित किए गए। उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफ़आरआई ने अधिकारियों के कौशल विकास और व्यवहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ओडिशा के मत्स्य क्षेत्र में उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने हेतु मत्स्यपालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है।

कक्षा सत्रों में अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन, मृदा और जल गुणवत्ता विश्लेषण का महत्व, सामान्य मछली रोग, रोग निदान विधियाँ, रोग प्रबंधन, पेन कल्चर और मत्स्य क्षेत्र में जीआईएस अनुप्रयोग जैसे विषयों को शामिल किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स में क्षेत्रीय भ्रमण एवं ऑन-फील्ड प्रायोगिक सत्र भी कराया गया।

फीडबैक में 90% प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को अत्यंत प्रभावी और कैरियर उन्नयन हेतु उपयोगी बताया। समापन सत्र में डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को बधाई दी और प्रमाण पत्र वितरित किए। प्रशिक्षण का संचालन डॉ. अपर्णा रॉय एवं डॉ. अजय साहा ने किया, जिन्हें श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अभिषेक साहा एवं श्री कौशिक मंडल का सहयोग मिला।

ग्रामीण आजीविका सशक्तिकरण में महिलाओं के मत्स्यपालकों को सशक्त बनाना: सुदूरबनों में SDGs प्राप्त करने के लिए संस्थान की SCSP के तहत पहल

सुंदरबनों में हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने और सतत मत्स्य पालन आजीविका बढ़ाने की दिशा में, आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान बैरकपुर ने 17 अगस्त 2025 को कुलटोली, सुदूरबन, पश्चिम बंगाल में इनपुट वितरण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के तहत महिलाओं के लिए घरेलू तालाब में मत्स्य पालन को सतत आजीविका विकल्प के रूप में बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। कार्यक्रम में कुल्तली मिलन तीरथ सोसाइटी का सहयोग रहा।

कार्यक्रम में 500 लाभार्थियों ने भाग लिया। ICAR-CIFRI ने प्रत्येक महिला मत्स्यपालक को 6 किग्रा उच्च गुणवत्ता वाले मछली के अंडे (भारतीय प्रमुख कार्प) और 120 किग्रा मछली चारा वितरित किया, ताकि वे अपने घरेलू तालाबों में मत्स्य पालन शुरू कर सकें। ICAR-CIFRI के विशेषज्ञों ने तालाब प्रबंधन पर सत्र आयोजित कर लाभार्थियों को आवश्यक कौशल प्रदान किए।

बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI ने कहा, "हमारा लक्ष्य केवल इनपुट वितरित करना नहीं, बल्कि लाभार्थियों की क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ाना है। घरेलू तालाबों को उत्पादक संपत्ति में बदलकर पोषण सुरक्षा और आय सुनिश्चित की जा सकती है।"

डॉ. विभा तंदन, निदेशक, IICB ने इस पहल की सराहना की और महिलाओं के लिए विज्ञान-आधारित तालाब मत्स्यपालन को बढ़ावा देने के लिए कुल्तली मिलन तीरथ सोसाइटी के सहयोग की प्रशंसा की। कार्यक्रम में महिलाओं को सतत मत्स्य पालन और लघु देशज मछली प्रजनन के बारे में जागरूक किया गया। लाभार्थियों ने साझा किया कि अब वे अपने तालाब को आय का स्रोत और बच्चों की शिक्षा का सहारा मानती हैं।

डॉ. प्रणय पारिडा और श्री प्रणब गोगोई, ICAR-CIFRI के वैज्ञानिकों ने लाभार्थियों को वैज्ञानिक मत्स्यपालन के बारे में जानकारी दी। यह पहल लाभार्थियों की आय क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें अपने आजीविका विकल्पों में सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है। ICAR-CIFRI की SCSP पहल विज्ञान-आधारित सामाजिक परिवर्तन और सुदूरबनों में महिलाओं के सशक्तिकरण का उदाहरण है।

भेद्यता से संभावनाओं की ओर: गंगा नदी बेसिन में लघु स्तर मत्स्य पालन पर कार्यशाला

गंगा नदी बेसिन में अंतर्स्थलीय लघु स्तर मत्स्य पालन पर एक कार्यशाला का आयोजन 18 अगस्त 2025 को ICAR-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बाराकपुर, पश्चिम बंगाल में किया गया। कार्यशाला का संयुक्त आयोजन ICAR-CIFRI, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) और V2V ग्लोबल पार्टनरशिप, वाटरलू विश्वविद्यालय (कनाडा) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न ICAR संस्थानों के विशेषज्ञों, मछुआरा सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों और समुदायों सहित 75 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पिछले 9 वर्षों से ICAR-CIFRI नदी पारिस्थितिकी, मत्स्य, जैव विविधता और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर कार्य कर रहा है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि लघु स्तर मत्स्य पालन कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे मछलियों की विविधता और भंडार में कमी, नदी-जलाशय संपर्क का टूटना, बांधों व बैराजों से जलवैज्ञानिक परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव।

मुख्य वक्तव्यों में डॉ. प्रतीप नायक (वाटरलू विश्वविद्यालय) और डॉ. बसंत कुमार दास (निदेशक, ICAR-CIFRI) ने जैव विविधता, सांस्कृतिक पहचान, खाद्य सुरक्षा और स्थानीय आजीविका को बनाए रखने में SSF की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने अस्थायी मौसम में शिकार, ज़ीरो-मेश जाल, ज़हर द्वारा मत्स्य पकड़ और आक्रामक प्रजातियों के प्रसार जैसी अस्थिर गतिविधियों पर चिंता जताई। विशेष रूप से छोटे स्तर के केकड़ा मत्स्य पालन, लघु देशज मछलियों और गंगा क्षेत्र विशेष मत्स्य पालन पर ध्यान दिया गया।

सिफारिशों में सामुदायिक मत्स्य प्रबंधन को मजबूत करना, प्रमुख प्रजातियों का संरक्षण, आर्द्रभूमियों का पुनरुद्धार, जल प्रवाह बहाली और जलवायु अनुकूल रणनीतियाँ जैसे प्रतिरोधी प्रजातियों का संवर्धन, बीज बैंक और पारंपरिक ज्ञान का उपयोग शामिल था। सतत केकड़ा मत्स्य पालन हेतु सॉफ्ट-शेल केकड़ा संवर्धन, ऑफ-सीजन शिकार पर नियंत्रण, हैचरी आधारित बीज आपूर्ति और स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला का प्रमाणीकरण ज़रूरी बताया गया।

कार्यशाला का समापन इस आह्वान के साथ हुआ कि प्रशिक्षण, वित्तीय सहयोग और स्थानीय ज्ञान की मान्यता के माध्यम से समुदायों को और सशक्त बनाया जाए। प्रतिभागियों ने सुझाव दिया कि जलवायु अनुकूलन, मत्स्य भंडार मूल्यांकन, सहभागी शासन और न्याय-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर गंगा बेसिन में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन को टिकाऊ और सक्षम बनाया जा सकता है।

आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला (वीकेएसए-रबी)

आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बाराकपुर में आज रबी सीज़न अभियान हेतु **विकसित कृषि संकल्प अभियान (VKSA)** पर एक राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। वीकेएसए एक राष्ट्रव्यापी पहल है जिसका उद्देश्य भारतीय कृषि के भविष्य को आकार देना और किसानों को *विकसित भारत@2047* की दृष्टि के अनुरूप सशक्त बनाना है। भारत सरकार ने इस अभियान को एक मिशन के रूप में परिकल्पित किया है ताकि कृषि नीतियों को मज़बूत किया जा सके, उत्पादकता बढ़ाई जा सके, किसानों की समृद्धि सुनिश्चित की जा सके और टिकाऊ खेती की पद्धतियों को बढ़ावा दिया जा सके। कार्यशाला का उद्देश्य रणनीतियों पर चर्चा करना और पश्चिम बंगाल के रबी सीज़न अभियान की कार्ययोजना को राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ संरेखित करना था।

कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई एवं पश्चिम बंगाल के लिए रबी सीज़न अभियान के नोडल अधिकारी ने की। सह-अध्यक्ष के रूप में डॉ. प्रदीप कुमार दे, निदेशक, आईसीएआर-एटीएआरआई, कोलकाता तथा डॉ. डी. बी. शाक्यवार, निदेशक, आईसीएआर-निनफेट, उपस्थित रहे। इसमें बारह आईसीएआर संस्थानों, दो राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और तीन कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. बि. के. दास ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई के प्री-खरीफ अभियान से प्राप्त अनुभव साझा किए, वहीं डॉ. डी. बी. शाक्यवार ने निनफेट की प्रमुख शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। सभी संस्थानों ने अपने अनुभव साझा किए।

डॉ. प्रदीप दे ने विज्ञान-आधारित कृषि विकास की महत्ता पर बल देते हुए अनुसंधान को किसानों तक पहुँचाने में **कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs)** और किसान-उन्मुख नवाचारों की अहम भूमिका बताई। संवाद सत्र में सहभागी संस्थानों ने वीकेएसए संचालन से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों पर बहुमूल्य सुझाव दिए। इस कार्यशाला से प्राप्त विचार-विमर्श और अनुशंसाएँ एक व्यापक राज्य स्तरीय कार्ययोजना तैयार करने में सहायक होंगी, जो *विकसित भारत@2047* के राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुरूप होगी।

मछली रोग निदान और प्रयोगशाला परीक्षण में ओडिशा के क्षेत्रीय अधिकारियों की क्षमता निर्माण

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) द्वारा ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के क्षेत्रीय अधिकारियों के लिए 18 से 22 अगस्त, 2025 तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अधिकारियों के ज्ञान को बढ़ाना और उन्हें मछली रोग निदान तथा प्रयोगशाला परीक्षण तकनीकों में दक्ष बनाना था। युवा

अधिकारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन करने के बाद विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया। यह पहल सीआईएफआरआई की सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन हेतु राज्यों के मानव संसाधन को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता का हिस्सा है।

इस प्रशिक्षण में कुल 28 अधिकारी (जिनमें 8 महिला अधिकारी शामिल थीं) ने भाग लिया। प्रतिभागियों के लिए 11 कक्षा सत्र, 2 प्रायोगिक सत्र और 2 क्षेत्रीय भ्रमण आयोजित किए गए। उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई ने युवा अधिकारियों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास की महत्ता पर जोर दिया, जिससे वे अपने ज्ञान और कौशल को मछुआरों तक पहुँचा सकें और उनकी आजीविका सुधार सकें। उन्होंने उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए मत्स्य और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं को समग्र दृष्टिकोण से संबोधित करने की भी आवश्यकता बताई। इसके बाद प्रतिभागियों को प्रयोगशाला का भ्रमण कराया गया। कक्षा सत्रों में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, मृदा और जल गुणवत्ता विश्लेषण का महत्व, सामान्य मछली रोग, निदान विधियाँ, बाड़े में रोग प्रबंधन, पेन कल्चर तथा मत्स्य पालन में एआई के अनुप्रयोग आदि विषय शामिल थे।

फील्ड विज़िट के दौरान प्रतिभागियों को पूर्वी कोलकाता वेटलैंड ले जाया गया, जहाँ ऑन-फील्ड प्रायोगिक सत्र भी आयोजित हुआ। फीडबैक सत्र में 90% प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण को अत्यंत प्रभावी और अपने करियर के लिए उपयोगी बताया। समापन सत्र में डॉ. बि. के. दास ने सभी प्रतिभागियों को सफल प्रशिक्षण हेतु बधाई दी और प्रमाणपत्र वितरित किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय श्री गणेश चंद्र और डॉ. डी. के. मीना ने किया, जिसमें श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अभिषेक साहा और श्री पंकज कुमार का सहयोग रहा।

तालाब से समृद्धि तक: दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में CIFRI का एक्वाकल्चर मॉडल SDG 1, 5 और 14

ग्रामीण आर्थिक उत्थान के लिए एक ऐतिहासिक पहल के रूप में, आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI) पिछले एक दशक से दक्षिण 24 परगना में घरेलू तालाब मत्स्य पालन को बढ़ावा दे रहा है। घरेलू तालाबों के पेयजल और मत्स्य पालन के दोहरे उपयोग को पहचानते हुए, संस्थान ने स्थानीय समुदायों—विशेष रूप से महिलाओं—को वर्षा आधारित इन जलाशयों को आय और पोषण के टिकाऊ स्रोतों में बदलने के लिए सशक्त बनाया है। इसी क्रम में 23 अगस्त, 2025 को आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने सस्य श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (RKMVERI), दक्षिण 24 परगना के सहयोग से अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के अंतर्गत एक जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में सोनारपुर ब्लॉक के 11 गांवों के 350 अनुसूचित जाति ग्रामीण लाभार्थियों को मत्स्य सामग्री वितरित की गई, जिनके तालाब 0.02 से 0.04 हेक्टेयर क्षेत्रफल के थे। प्रत्येक लाभार्थी को 8 किलो मछली बीज (भारतीय प्रमुख कार्प) और 120 किलो मछली आहार दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास, ने अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर प्रकाश डाला और आजीविका व पोषण सुरक्षा में पिछवाड़े तालाब संस्कृति के दीर्घकालिक लाभों पर जोर दिया। पंचायत प्रधान श्रीमती ललिता बर ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न मत्स्य प्रौद्योगिकी प्रदर्शनों के माध्यम से आजीविका सुधार कर

सशक्त बना रहा है। लाभार्थियों ने भी गहरी संतुष्टि व्यक्त की। सोनारपुर की पार्वती पुरकैत ने कहा, "कभी नहीं सोचा था कि हमारा छोटा तालाब आय का स्रोत बन सकता है।" वहीं बाबलु मंडल ने कहा, "इस पहल ने हमें आशा दी है। अब हमें समझ आया कि मत्स्य पालन बच्चों के पोषण को सुधार सकता है और हमें घर बैठे आय दे सकता है।"

डॉ. स्वगत घोष, डॉ. लियंथुम्लुआइया और डॉ. कविता कुमारी ने वैज्ञानिक मत्स्य पालन पर जानकारी दी। इस कार्यक्रम ने केवल संसाधन ही नहीं दिए, बल्कि महिलाओं में ज्ञान और आत्मविश्वास भी जगाया, जिनमें से कई ने पहले कभी संगठित मत्स्य पालन नहीं किया था। परंपरागत ज्ञान को वैज्ञानिक पद्धतियों से जोड़कर सीआईएफआरआई ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। पिछवाड़े तालाब मत्स्य पालन मॉडल यह दर्शाता है कि कैसे छोटे पैमाने पर किए गए हस्तक्षेप, जब अनुसंधान और सामुदायिक भागीदारी से समर्थित हों, तो परिवर्तनकारी परिणाम ला सकते हैं। वैज्ञानिक –किसान संवाद ने कई समस्याओं का समाधान किया और सशक्तिकरण, स्थिरता और आशा की व्यापक कहानी को प्रतिबिंबित किया।

ग्रामीण मत्स्य कार्य अनुभव कार्यक्रम का आयोजन, सासाराम (बिहार) के सात छात्रों ने लिया हिस्सा

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI) ने 28 जुलाई से 26 अगस्त, 2025 तक बिहार के गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय, एनआईएएस के बी.एफ.एससी. छात्रों के लिए एक माह का ग्रामीण मत्स्य कार्य अनुभव (RFWE) कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सात छात्रों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण स्नातक पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य छात्रों को ग्रामीण मत्स्य प्रणालियों, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और सामुदायिक स्तर पर मत्स्य प्रबंधन से अवगत कराना है।

प्रशिक्षण के दौरान छात्रों को CIFRI की पाँच प्रभागों से जोड़ा गया, जहाँ उन्हें चल रहे प्रोजेक्ट्स और नई शोध पहलों की जानकारी दी गई। प्रत्येक प्रभाग के वैज्ञानिकों ने संसाधन व्यक्ति के रूप में सैद्धांतिक और प्रायोगिक सत्र लिए। छात्रों ने खलसी वेटलैंड, मिथन जलाशय और गंगा नदी जैसे स्थलों का दौरा किया और विभिन्न पारिस्थितिकीय नमूना तकनीकों का अभ्यास किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सुंदरबन क्षेत्र में सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन (PRA) अभ्यास भी किया।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने जलवायु परिवर्तन और जलीय प्रदूषण जैसे मुद्दों के साथ-साथ मत्स्य विज्ञान में प्रयुक्त उन्नत व मूलभूत जैव-प्रौद्योगिकीय उपकरणों का ज्ञान अर्जित किया। उन्हें CIFRI की उन्नत विश्लेषणात्मक यंत्रों जैसे ICP-MS, GC-MS, HPLC, FTIR, GC और PCR से परिचित कराया गया।

समापन सत्र में निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई, डॉ. बि. के. दास ने हाथों-हाथ प्रशिक्षण और कौशल विकास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को बधाई दी और प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अपर्णा राय (वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रभारी E&T सेल), डॉ. सजिना ए. एम. (वरिष्ठ वैज्ञानिक, RWF डिवीजन), डॉ. प्रितिज्योति माझी (वैज्ञानिक, RWF डिवीजन) द्वारा किया गया, जिन्हें श्री सुजीत चौधरी (CTO), श्री मनबेंद्र राय (TO) और श्री कौशिक मंडल (STA) का सहयोग प्राप्त हुआ।

सुंदरबन के एससी/एसटी मछुआरों को प्रशिक्षण और सामग्री वितरण के माध्यम से सशक्त बनाया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफ़आरआई), बैरकपुर ने सुंदरबन के जॉयगोपालपुर में अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) और अनुसूचित जनजाति घटक (STC) के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं जन-जागरूकता सह सामग्री वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील सुंदरबन क्षेत्र के एससी/एसटी मछुआरों को वैज्ञानिक मत्स्यपालन पद्धतियों से जोड़ना और उनके आजीविका स्रोत को मजबूत करना था।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री मिथुन विश्वास, आईएएस, उप–विभागीय अधिकारी (कैनिंग); प्रो. (डॉ.) दीपक रंजन मंडल, पूर्व कुलपति, सिधो कान्हो बिरसा विश्वविद्यालय, पुरुलिया; श्री बिस्वजीत महाकुर, सचिव, जॉयगोपालपुर ग्राम विकास केंद्र; तथा डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफ़आरआई की उपस्थिति में हुआ। डॉ. दास ने मछुआरों को सतत मत्स्य पालन और बेहतर आय के लिए आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर 300 से अधिक मछुआरों को गुणवत्तापूर्ण कार्प बीज और आहार उपलब्ध कराया गया। साथ ही ग्रामीण युवाओं में सजावटी मत्स्य संस्कृति की जागरूकता हेतु 50 एक्वेरियम निकटवर्ती विद्यालयों को वितरित किए गए।

वैज्ञानिकों—डॉ. पी. के. परिदा, डॉ. डी. भक्त, डॉ. लियानथुआमलुआइया और डॉ. एस. कुमारी—ने तालाब प्रबंधन, मत्स्य स्वास्थ्य देखभाल, आहार प्रबंधन और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार समाधान पर प्रशिक्षण दिया।

आईसीएआर–सीआईएफ़आरआई ने सुंदरबन के कमजोर समुदायों को निरंतर तकनीकी सहयोग प्रदान कर उनकी आजीविका, पोषण सुरक्षा और सतत भविष्य सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

MAVERICK NEWS 30

Your Digital News Pulse : News for All

Empowering Communities Through Aquaculture: CIFRI's SCSP Initiative Supports SDG Goals in South 24 Parganas

Government of India
Press Information Bureau

Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying

CIFRI's Aquaculture Model Supports SDG 1, 5, and 14 in South 24 Parganas, West Bengal

प्रयागराज, बुधवार 13 अगस्त, 2025 2

नमामि गंगे के तत्वावधान में कार्प मछलियों के बीजों को गंगा नदी में छोड़ा गया

प्रयागराज। मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए भा॰कृ॰अनु॰प॰-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक बारह अगस्त दो हजार पच्चीस को पवित्र पावन गंगा और यमुना के संगम तट स्थित अरैल घाट पर गंगा नदी में पाँच हजार भारतीय प्रमुख कार्प - कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डा0 डी एन झा ने उपस्थित लोगों को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग होना रखा है साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है, केन्द्राध्यक्ष डा0 बी आर चहान ने समारोह में आये लोगों का स्वागत करते हुए को स्वच्छ रखने का शपथ दिलवाया, इस अवसर पर गंगा

খবর এখন

সান্ধ্য দৈনিক

সত্যতা যাচাই করে তবেই খবর | খবরের ভেতরের খবর

আইসিএআর-সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ ইনস্টিটিউট দীর্ঘদিন ধরে দক্ষিণ ২৪ পরগনায় আঙিনার পুকুরকে দীর্ঘস্থায়ী আয়ের উৎসে রূপান্তর করার উদ্যোগ নিয়ে কাজ করছে। আগে পানীয় জলের জন্য ব্যবহৃত এই ছোট ছোট বর্ষানির্ভর পুকুর আজ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে মৎস্যচাষের মাধ্যমে পুষ্টি ও জীবিকার নতুন সম্ভাবনা তৈরি করছে। বারাকপুরে স্থিত সিফ্রি ও জয়গোপালপুর গ্রাম বিকাশ কেন্দ্র যৌথভাবে সুন্দরবনের বাসন্তী ব্লকে এক বৃহৎ গণসচেতনতামূলক কর্মসূচি আয়োজন করে। ১১টি গ্রামের ৩০০ জন প্রান্তিক সুন্দরবনের মানুষ অংশ নেন। এর মধ্যে ১০০ জন তফসিলি জাতি ও ২০০ জন তফসিলি উপজাতি পরিবারকে ৬ কেজি ভারতীয় প্রধান কার্প (রুই, কাতলা ও মৃগেল) মাছের বাচ্চা এবং ৮০ কেজি খাদ্য সরবরাহ করা হয়। উপস্থিত ছিলেন সিফ্রির ডিরেক্টর ড. বি কে দাস। এনজিওর সম্পাদক বিশ্বজিৎ মাহাকুর গ্রামীণ মহিলাদের ক্ষমতায়নে প্রকল্পটির ভূমিকার প্রশংসা করেন। এ ছাড়াও ড. প্রণয়া পারিদা, ড. লিয়ানথুমলুয়াইয়া ও ড. দিবাকর ভক্তা গ্রামবাসীদের পুকুর ব্যবস্থাপনা, খাদ্য ব্যবহার ও মাছের স্বাস্থ্য নিয়ে হাতে-কলমে প্রশিক্ষণ দেন।

AgroSpectrum

ASEAN Landscape & Gardening Expo

PM-KISAN Utsav Diwas celebrated in Kolkata with focus on fisheries and farmer welfare

The ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, in collaboration with the ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Kolkata Centre, observed 'PM-KISAN Utsav Diwas' on Saturday, marking a significant outreach initiative under the Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi (PM-KISAN) scheme.

The event was graced by Rajiv Ranjan Singh, Hon'ble Union Minister for Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, and Panchayati Raj. Addressing the gathering, the Minister reaffirmed the Centre's unwavering commitment to the economic empowerment of farmers and fishers across India. He also interacted with fishers and fish farmers and highlighted the critical role of fisheries in rural employment and livelihood generation.

The programme saw the participation of 81 fishers and fish farmers from South 24 Parganas district, alongside scientists and technical officers from both ICAR-CIFRI and ICAR-CIFE. The event was formally inaugurated with the traditional watering of a holy plant Tulsi by the Hon'ble Minister.
One of the key highlights of the day was the virtual address by Prime Minister Narendra Modi , which was broadcast live to over 2 crore farmers across the country through video conferencing. Farmers connected via ICAR institutions, Krishi Vigyan Kendras (KVKs), agricultural universities, PM Kisan Samriddhi Kendras, and Primary Agricultural Cooperative Societies.

During his address, the Prime Minister announced the release of the 20th instalment of the PM-KISAN scheme, amounting to Rs 20,500 crore, benefitting over 9.7 crore farmers nationwide. West Bengal alone accounted for 44.75 lakh beneficiaries. Many of the farmers present received real-time SMS confirmations of the credited amount.

Following the Prime Minister's address, Shivraj Singh Chouhan, Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, interacted with farmers from different states. He responded to their queries and urged them to adopt sustainable and integrated agricultural practices. He also encouraged them to avail themselves of other government schemes such as the Kisan Credit Card (KCC), Pradhan Mantri Matsya Sampada Yojana (PMMSY) and PM-KISAN.

The event in Kolkata was jointly coordinated by Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, and Dr. T. K. Ghoshal, Head, ICAR-CIFE Kolkata Centre, along with their teams . Dr. Das stressed on the importance of linking fisheries research with field-level outreach and government support to ensure inclusive development, especially in the inland and estuarine fishing sectors.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फ़ैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है